जामिया मिल्लिया इस्लामिया
जनसंपर्क एवं मीडिया समन्यवक कार्यालय

03 अक्टूबर, 2020

प्रेस विज्ञप्ति

जामिया और एमएचई ने "राष्ट्रवाद के युग में एशियाई सार्वभौमिकता" विषय पर मुशिरुल हसन मेमोरियल लेक्चर का आयोजन किया

जामिया मिल्लिया इस्लामिया ने मुशीरुल हसन एंडोमेंट (एमएचई) के साथ मिलकर दिवंगत प्रोफेसर मुशीरुल हसन की याद में, 1 अक्टूबर 2020 को मुशीरुल हसन मेमोरियल लेक्चर का उद्घाटन किया। प्रो हसन 2004 से 2009 तक जामिया के कुलपति थे।

उक्त विषय पर आनलाइन व्याख्यान, हार्वर्ड विश्वविद्यालय में गार्डिनर प्रोफेसर ऑफ हिस्टरी, सुगाता बोस ने दिया।

जामिया की कुलपति प्रो नजमा अख्तर ने प्रोफेसर मुशीरुल हसन को श्रद्धांजलि दी और व्याख्यान में हिस्सा लेने वालों का स्वागत किया। मुशीरूल हसन, इतिहास के प्रोफेसर और बाद में कुलपति के तौर पर तकरीबन 3 दशकों से जामिया से जुड़े थे। प्रो अख्तर ने जामिया की 100 साल की यात्रा का ज़िक्र करते हुए बताया कि कैसे इस संस्थान ने लगातार मेहनत करते हुए आज सर्वश्रेष्ठ केंद्रीय विश्वविद्यालयों में से एक के रूप में अपने को स्थापित किया है।

आधुनिक भारत के प्रख्यात इतिहासकार प्रोफेसर सुगाता बोस ने भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन के प्रख्यात नेताओं, महात्मा गांधी और रवींद्रनाथ टैगोर के अलावा आधुनिक चीनी राष्ट्रवादियों, सन-यात-सेन की भूमिका पर विस्तार से बात की। सेन, 20 वीं शताब्दी में एशियाई सार्वभौमिकता के अग्रणी समर्थकों में से एक थे। लेकिन, 20 वीं शताब्दी के उत्तरार्ध में कुछ एशियाई देशों की, यूरोपीय किस्म की साम्राज्यवादी नीतियों जैसी आक्रामक राष्ट्रवादी नीति अपनाने की वजह से, उक्त नेताओं के विचार सार्थक नहीं हो सके।

महात्मा गांधी का मानना था कि एशियाई सार्वभौमिकता की अवधारणा के लिए शांति और अहिंसा पहली शर्त है।

प्रोफेसर बोस ने टिप्पणी की कि इस विचार की सफलता, भारत-चीन संबंधों और इन दो प्रतिस्पर्धी शक्तियों के अपनी महत्वाकांक्षाओं से ऊपर उठने पर निर्भर करेगी। एशिया महाद्वीप की बेहतरी और भविष्य के लिए काम करने क्षमता भी इन दो संभावित महाशक्तियों के रवैये पर निर्भर करेगी। उन्होंने कहा कि दुर्भाग्य से आधुनिकता और विकास का पश्चिमी मॉडल, जो सैन्य रूप से राष्ट्रवादी और तकनीकी रूप से आक्रामक है, वह उन मूल्यों के लिए का आधार नहीं बन सकता है, जो सार्वभौमिकता, शांति और मानव विकास की बात करते हैं।

प्रोफेसर बोस ने कहा कि आज की एशियाई ताकतों को सार्वभौमिक राष्ट्रवाद के समावेशी आदर्श को अपनाकर, संकीर्ण राष्ट्रवाद से मुक्त भविष्य सुनिश्चित करने के लिए, आपसी समझ बना कर एशिया का नेतृत्व करना चाहिए।

डॉ ज़ोया हसन, प्रो एमेरिट्स, जेएनयू, ने मुशिरुल हसन की उपलब्धियों को, व्यापक दृष्टि और मिशन वाले आधुनिक जामिया के निर्माताओं में से एक बताया।

प्रोफ़ेसर असदुद्दीन, डीन, स्कूल ऑफ़ ह्यूमैनिटीज़ एंड लैंग्वेजज़ ने, मुशीरुल हसन को एक ऐसी शख्सियत के तौर पर याद किया, जो मानवता से भरपूर थे और जिनमें ललित कलाओं और सौंदर्यशास्त्र की बड़ी समझ थी।

डॉ प्रभात पटनायक, प्रोफेसर एमेरिटस, जेएनयू ने कहा कि पैन एशियाई एकता और सार्वभौमिकता के विचार तभी मूर्त रूप लेंगे, जब गरीबी और असमानता को एशिया, विशेष रूप से भारत से मिटा दिया जाएगा। भारत को एक ऐसे वास्तविक कल्याणकारी राज्य की ओर बढ़ने की दिशा में क़दम उठाने की ज़रूरत है, जो अपने सभी नागरिकों के लिए एक न्यूनतम आय की गारंटी दे।

राजनीतिक विज्ञान विभाग की प्रो रूमकी बसु के धन्यवाद प्रस्ताव के साथ मुशिरुल हसन मेमोरियल लेक्चर का समापन हुआ। उन्होंने, 21वीं सदी की रचनात्मक दृष्टि से लैस एशिया के उत्थान के बारे में एक मौलिक प्रस्तुति के लिए डॉ सुगाता बोस का धन्यवाद किया ।

अहमद अज़ीम
जनसंपर्क अधिकारी एवं मीडिया समन्वयक